# शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र : मेरे अनुभव

नीलेश मालवीय

ग्रामीण क्षेत्र में पढ़ने और लिखने की संस्कृति विकसित करने हेतु हमने साढ़े तीन साल तक तामिया विकासखण्ड, जिला छिन्दवाड़ा, मध्य प्रदेश में समुदाय के साथ काम किया। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हमने बच्चों को बाल शिक्षा साहित्य तथा अन्य शिक्षण-सामग्री उपलब्ध करवाई। यह सुनिश्चित किया कि गाँव के पढ़े-लिखे युवक-युवती बच्चों की मदद कर सकें। पालक अपने बच्चों की उचित परवरिश कर सकें और उन्हें नियमित रूप से स्कूल भेज पाएँ। साथ ही शासकीय स्कूलों में दोस्ताना माहौल बनाने की कोशिश की, जिससे कि बच्चों को स्कूल में लिखने-पढ़ने से डर न लगे और वे आत्मविश्वास एवं उत्साह के साथ स्कूल की गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी कर सकें। इस तरह समुदाय और शिक्षकों के बीच सम्बन्ध स्थापित हुए। गाँव के युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के मायने क्या हैं, यह समझ बनाने हेतु तैयार किया गया, ताकि वे ख़ुद सीख सकें, साथ ही अपने छोटे-भाई बहन, अपने गाँव के बच्चों को भी सिखा सकें।

## शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र क्या हैं?

शासकीय प्राथमिक शाला में पढ़ने वाले बच्चों की सहायता के लिए एकलव्य संस्था ने समुदाय के साथ मिलकर 34 गाँवों में 50 'शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र' बनाए। कुछ केन्द्र गाँव के घरों में संचालित होते थे, और कुछ केन्द्र स्कूल में संचालित होते थे। यह केन्द्र, स्कूल समय के पहले 2 घण्टे चलते थे। गाँव/ मोहल्ले की प्राथमिक शाला में पढ़ने वाले लगभग 30 बच्चे लिए जाते थे। इन 2 घण्टों में बच्चों को भाषा विषय के अन्तर्गत सुनना, बोलना, पढ़ना-लिखना तथा गणित में संख्या की समझ, जोड़, घटा, गुणा, भाग, भिन्न आदि कौशलों में दक्ष करने का काम किया जाता था।

## केन्द्र संचालक एवं समिति

शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र ठीक तरह से काम करें इस हेतु समुदाय के कुछ लोगों ने इसकी ज़िम्मेदारी ली थी। इसके लिए हरेक केन्द्र पर एक समिति बनाई गई थी और प्रत्येक समिति में 7 सदस्य थे। समिति और पालक मिलकर केन्द्र संचालकों का चयन करते थे। चयन के दौरान समिति के पास गाँव के पढ़े-लिखे युवाओं के नाम आते, जिन पर समिति के सदस्य आपस में बात करते। केन्द्र संचालकों का चयन उनके व्यवहार, उनकी, शैक्षिक योग्यता, बच्चों के साथ काम करने की क्षमता आदि के आधार पर किया जाता था। चयन हो जाने के बाद संचालक को उसकी ज़िम्मेदारियों, वेतन एवं मासिक गोष्ठी/ प्रशिक्षण में भागीदारी के बारे में बताया जाता। प्रत्येक माह पालक-बैठक का आयोजन किया जाता था। जिसमें केन्द्र की उपलब्धि, समस्याएँ और केन्द्र में किए गए काम की समीक्षा करना समिति की ज़िम्मेदारी थी।

## प्रशिक्षण

एकलव्य ने तामिया में केन्द्र संचालकों के लिए एक माह के प्रशिक्षण का आयोजन किया। इसमें संचालकों को शैक्षिक साहित्य पढ़ने और उस पर बात करने, भाषा और गणित में बुनियादी दक्षताओं के लिए एनसीईआरटी की पुस्तकों से मदद लेने, खेल द्वारा शिक्षण गतिविधियों में प्रतिभाग करने, शिक्षण-डायरी लेखन एवं अपने काम की योजना बनाने आदि पर प्रशिक्षित किया गया।

प्रशिक्षण के दौरान प्रति सप्ताह शनिवार के दिन स्कूल में बैठक की गई। इसमें पिछले सप्ताह किए गए काम का विवरण पढ़ना, शैक्षिक लेखों को पढ़ना आदि गतिविधियाँ की गईं। इनमें स्कूल के शिक्षक भी प्रतिभाग करते थे और अपने अनुभव को साझा करते थे। अगले सप्ताह की योजना बनाई जाती थी। गतिविधियों को करके देखा जाता था। शिक्षकों की मदद से प्रतिभागियों द्वारा कुछ व्यावहारिक गतिविधियाँ भी कराई जाती थीं।

## शिक्षण का तरीका

केन्द्र संचालक, बच्चों के स्तर को ध्यान में रखकर योजना बनाता था। वह यह तय करता था कि कौन-सी अवधारणा को विकसित करना है, उसके क्या उद्देश्य होंगे, इस उददेश्य के लिए कौन-सी गतिविधियाँ/खेल उपयुक्त होंगे और इसके बाद किस तरह के अभ्यास दिए जाएँगे। अन्य सम्बन्धित मुद्दे भी उसके द्वारा तय किए जाते थे। केन्द्र संचालक इस बात पर नज़र रखते कि बच्चों ने क्या किया, क्या सीखे और इसके बाद मूल्यांकन प्रपत्र में तारीख़ दर्ज करते। बच्चों की गलतियाँ भी मूल्यांकन रजिस्टर में अंकित की जातीं और अगले दिन वे बच्चे के साथ समय बिताने और सम्बन्धित गतिविधियों के द्वारा अवधारणा को सिखाने के लिए तैयार रहते।

केन्द्र में कक्षा पहली से पाँचवी तक के सभी 20-25 बच्चों को एक साथ बैठाया जाता था। पहला एक घण्टा भाषा और फिर एक घण्टा गणित विषय के लिए आवंटित था। कभी-कभी एक दिन पूरे दो घण्टे गणित और दूसरे दिन पूरे दो घण्टे भाषा पढ़ाई जाती थी। इस तरह से बच्चों को भाषा और गणित की बुनियादी दक्षताएँ प्राप्त करने में मदद करने का प्रयास किया जाता था।

बच्चों को बुनियादी दक्षताओं में कुशल बनाने के लिए भाषा में एकलव्य द्वारा प्रकाशित *'पढ़ो-लिखो मज़ा करो'* किताब को अपनाया गया था और गणित में एनसीईआरटी की पुस्तक को अपनाया गया था।

## गतिविधियों के उदाहरण

यह तय किया कि भाषायी कौशल-विकास के लिए शुरुआत में प्रति सप्ताह बच्चों के अपने परिवेश के पाँच आसान और परिचित शब्द लिए जाएँगे। जैसे कुछ शब्द हो सकते हैं – *कप, बस, नल, माला, एक* आदि। बच्चों की इन शब्दों और उनकी ध्वनियों से पहचान करवाई जाएगी और उनसे नए शब्द बनाए जाएँगे। इसके बाद सभी बच्चों को एक बड़े गोल घेरे में बैठाकर शुरू के 10 मिनट इन शब्दों से बनने वाली कोई एक कहानी सुनाई जाती। इसके बाद बोर्ड पर इस कहानी को लिखा और पढ़ा जाता। इसके बाद अलग-अलग स्तर के बच्चों को छोटे-छोटे समूह में बैठाकर उनके पठन स्तर के हिसाब से कहानी में आए शब्दों में निहित ध्वनियों को पहचानने, व अक्षर और मात्रा जोड़कर शब्द बनवाए जाते। यह सब कुछ गतिविधियों के माध्यम से, कई तरह की शिक्षण-सामग्री का उपयोग करते हुए, खेल के माध्यम से सिखाया जाता ताकि बच्चे शब्दों की पहचान, उनको पढ़ना, लिखना तथा उनमें निहित ध्वनियों की पहचान कर पाएँ।

*कौन आया कौन गया* का खेल : इसमें सभी बच्चों को कोई तीन शब्द कार्ड दिखाए जाते हैं। जैसे कप, बस, नल दिखा दिए। इसके बाद कोई एक बच्चा बाहर जाता है। इस बीच दिखाए गए तीन कार्ड में से कोई एक कार्ड बदलकर उसकी जगह नया कार्ड रख दिया जाता है। जैसे 'बस' को बदलकर 'एक' रख दिया। बाहर गया बच्चा अन्दर आता है और देखता है कि कौन-सा कार्ड गया और कौन-सा नया कार्ड आ गया। फिर वह बताता है कि 'बस' वाला कार्ड यहाँ से चला गया है और 'एक' आ गया है।

इसी तरह से चित्र कार्डों पर दिए गए नामों को अक्षर और मात्रा-कार्ड जोड़कर बनाया जाता है। उदाहरण के तौर पर 'कप'। फिर जिन्होंने नाम बनाया है, वे उस नाम को पढ़कर बताते हैं। अब बाकी बच्चों को 'कप' में जितने अक्षर हैं उतनी बार ताली बजानी होती है। 'कप' हिन्दी के दो अक्षरों से मिलकर बना है, यानी दो बार ताली बजेगी।

बारी-बारी से सभी शब्द लिए जाते हैं, और उनमें जितने अक्षर हैं बच्चे उतनी तालियाँ बजाते हैं। फिर अगली गतिविधि में बच्चों से शब्द के आख़िरी अक्षर को पहचानने को कहा जाता है, और फिर उस अक्षर से बनने वाले नए शब्द बताने को कहा जाता है। जैसे 'कप' में आख़िरी अक्षर है 'प' तो बच्चों को 'प' ध्वनि से बनने वाले शब्द बनाने होंगे जैसे 'पानी' या 'पतंग'। इस गतिविधि में उनके सहपाठियों के नाम के अक्षरों और मात्राओं को भी इस्तेमाल करते हुए नए शब्द बनाने और ज़ोर-ज़ोर से पढ़ने को भी शामिल किया जा सकता है। जिन बच्चों को शब्द पढ़ना और ध्वनियाँ पहचानना आता है, उन बच्चों को छोटे-छोटे वाक्य लिखने, चित्रों के बारे में बोलने और उसके अगले चरण में कहानी के पात्रों और घटनाओं के बारे में लिखने की गतिविधि करवाई जाती है। गतिविधि के बाद संचालक बच्चों के काम को जाँचते हैं। यदि बच्चे को कुछ समझने में कठिनाई महसूस हो रही है या उसे समझ नहीं आया है तो संचालक आकलन रजिस्टर में यह दर्ज कर देते। अगली गतिविधि की योजना बच्चे को उस अवधारणा पर समझ बनाने में मदद करने के आधार पर बनाई जाती।

## गणित की गतिविधियाँ

*मात्रा की समझ और ठोस वस्तु से जोड़-घटा करने का अभ्यास*

मात्रा की अवधारणा को समझाने के लिए सभी बच्चों को बड़े गोल घेरे में बैठाकर 100 मोतियों को गिनवाया जाता है। सभी बच्चे बारी-बारी से आकर गिनते हैं। छोटे बच्चे 1-1 करके गिनते हैं। बड़े बच्चे 2-2, 5-5, 10-10 के समूह में गिनते हैं। इस तरह गिनने के तरीक़े से वे एक-दूसरे से काफ़ी कुछ सीखते हैं।

एक बच्चे को 50 मोती दिए जाते हैं। फिर उसको बाहर भेज दिया जाता है। उसके जाने के बाद कुछ मोतियों को निकालकर एक कटोरी के अन्दर छिपा दिया जाता है। बाहर भेजे गए बच्चे को पुन: बुलाया जाता है। वह कटोरी के बाहर पड़े मोतियों को गिनकर यह बताता है कि कटोरी के अन्दर कितने मोती हैं।

इसी तरह तीलियों के बण्डल से स्थानीय मान, इकाई, दहाई, सैकड़ा की समझ बनाई जाती है। तीलियों के बण्डल को सामने रखकर कोई एक संख्या बोलकर बण्डल से उतनी तीलियाँ देने को कहा जाता है। जैसे अगर हम 45 तीलियाँ माँगते हैं तो टीम 4 बण्डल और 5 तीलियाँ देगी। इसके बाद स्थानीय मान कार्ड से उन संख्याओं को बनाया जाता है और बोर्ड पर लिखा जाता है। फिर किन्हीं दो संख्याओं में बड़ी संख्या और छोटी संख्या के बारे में पूछा जाता है। और वह क्यों बड़ी या छोटी है इसका कारण बताने को भी कहा जाता है।

## अन्य गतिविधियाँ

समय-समय पर बाल-सभा, बाल-अख़बार, चित्र बनाने का काम किया जाता था जिसे बच्चों की फाइल में लगाया जाता था। इन सभी दस्तावेज़ों और की गई गतिविधियों के आधार पर शिक्षक अपने नज़रिए से यह तय करता था कि बच्चे ने पूरे साल में कौन-सी दक्षताएँ प्राप्त कीं। इसको ध्यान में रखकर प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के पालकों एवं शिक्षकों की सूचना के लिए एक रिपोर्ट कार्ड बनाया जाता था।

शैक्षणिक सामग्री के रूप में प्रत्येक केन्द्र में बच्चों की आवश्यकता को ध्यान में रखकर शब्द-कार्ड, मात्रा-कार्ड, वाक्य-कार्ड, कविता-पोस्टर, कहानी-पोस्टर, कविता-कहानी की वाक्य पट्टी और बच्चों के द्वारा बनाए गए चित्र, स्थानीय घटनाओं का संकलन, बाल-साहित्य, बच्चों के द्वारा सुनाई गई कहानियों का संकलन, स्थानीय खेल, पहेलियों का संग्रह, लोक साहित्य, एकलव्य द्वारा प्रकाशित *'पढ़ो-लिखो मज़ा करो'* पुस्तक, *ख़ुशी-ख़ुशी* पाठ्यपुस्तक आदि सामग्री पर्याप्त मात्रा में दी गई थीं।

गणित सिखाने के लिए और मात्रा की समझ हेतु अबैकस, गिनमाला, संख्या-कार्ड, स्थानीय मान कार्ड, एनसीईआरटी की किताब, *ख़ुशी-ख़ुशी* किताब, ठोस वस्तु जैसे कंकड़, माचिस की तीली आदि सामग्री उपलब्ध कराई गई थी।

## पुस्तकालय

गाँव में लिखने-पढ़ने की संस्कृति का विकास हो, इस हेतु प्रत्येक केन्द्र में एक पुस्तकालय शुरू किया गया और प्रत्येक को लगभग 200 किताबें दी गईं। बच्चे केन्द्र से किताबें अपने घर लेकर जाते थे, पढ़ते थे और घर के बड़े-बुज़ुर्ग, भाई-बहन सभी लोगों को पढ़ने के लिए देते थे। बच्चों को घर में अपना पुस्तकालय बनाने के लिए भी प्रोत्साहित किया गया। एकलव्य पुस्तकालय की पुस्तकें गाँव में ले जाई गईं। वहाँ पालक अपने बच्चों के साथ आए और 3 किताबें पसन्द कीं। इस तरह से उन्हें अपने घरों में पुस्तकालय बनाने में मदद की गई।

केन्द्र संचालक केन्द्र में रखी किताबों में से बच्चों को कहानी पढ़कर सुनाते थे। बच्चों को किताबों से पढ़ने, दूसरों को भी पढ़ाने, चित्रों पर बातचीत करने, कहानी में दी गई घटनाओं को लिखने में मदद की जाती थी। एक बार तो कठपुतलियों के माध्यम से एक कहानी भी प्रस्तुत की गई। बच्चों के द्वारा बनाए हुए चित्रों को और लिखी हुई कहानियों को दीवार पर लगाया जाता था ताकि बच्चे उन चित्रों को देखें, कहानी तथा घटनाओं को पढ़ें। बच्चों की लिखी हुई कहानियों, चित्रों, घटनाओं को इकट्ठा करके माह में एक बार अख़बार बनाया जाता था। पालकों द्वारा सुनाई गई स्थानीय कहानियों को भी बच्चे सुनते थे। यह स्थानीय सन्दर्भ बच्चों को पढ़ना सीखने में काफ़ी मदद करता था।

## आस-पास के पेड़-पौधों के बारे में जानकारी इकट्ठी करना

बच्चों से उनके आस-पास उगने वाले पेड़-पौधों के नाम और उनके उपयोग लिखने को कहा गया। मासिक पालक बैठक में पालकों को बच्चों के द्वारा लिखे गए लेख पढ़कर सुनाए गए। बच्चों ने पेड़-पौधों के औषधीय गुणों के बारे में बहुत अच्छा लिखा। इससे उनको अपनी प्रकृति को जानने-समझने और पेड़-पौधों के उपयोग से परिचित होने का मौक़ा मिला। पालकों ने भी इन पेड़-पौधों के बारे में अपनी जानकारी साझा की और लेख को अच्छा बनाया। इसके बाद इन लेखों को एकलव्य द्वारा प्रकाशित चकमक पत्रिका में प्रकाशित किया गया और जिन बच्चों के लेख छपे, उन्हें चकमक पत्रिका भेंट की गई।

## एक्सपोज़र विज़िट

समय-समय पर प्रत्येक केन्द्र से 3 पालकों एवं कक्षा तीसरी से पाँचवी तक के 3 बच्चों को आस-पास संचालित उद्योग, पुलिस थाना, थर्मल पावर प्लांट, रेलवे स्टेशन, साइंस सेंटर, संग्रहालय, प्रिंटिंग प्रेस, पार्क, जिम, वॉटर फिल्टर प्लांट आदि के अवलोकन के लिए एक्सपोजर विज़िट पर ले जाया गया। उन्होंने स्थानीय क़ानून, पुरानी परम्पराओं और बिजली बनाने के तरीक़े के बारे में भी जाना। विज़िट से बच्चों को अपने आस-पास की चीज़ों को जानने-समझने का मौक़ा मिला। बच्चों ने विज़िट के अपने अनुभवों को लिखित रूप से व्यक्त किया।

## बाल-मेला का आयोजन

पूरे साल बच्चों ने क्या सीखा इस बात का प्रदर्शन करने के लिए बाल-मेलों का आयोजन किया गया। बाल-मेलों की गतिविधियों में क्विज़, बच्चों के द्वारा बनाए गए चित्रों, उनके द्वारा लिखी गई कहानियों, मिट्टी के खिलौनों की प्रदर्शनी शामिल थी। बच्चों को अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन का मौक़ा देने के लिए कुर्सी दौड़, खो-खो, कबड्डी आदि खेलों का आयोजन किया गया।

## गणित दक्षता का प्रदर्शन

बाल-मेला में एक स्थानीय बाज़ार लगाया गया। नकली नोटों के माध्यम से बच्चों ने असली चीज़ों को *'बेचा'* और लोगों ने *'ख़रीदा'*। इस बिक्री के दौरान बच्चों ने दुकान का संचालन किया एवं पैसे का लेन-देन किया।

बच्चों और पालकों ने अपनी ऊँचाई नापी, वज़न तौला और

अपना बॉडी मॉस इन्डेक्स निकाला। किसका वज़न अधिक है, किसका कम है और किसका बहुत कम है इसका पता लगाया।

## समुदाय की भागीदारी

प्रत्येक माह, समुदाय के साथ एक बैठक का आयोजन किया जाता जो कि शाम के वक़्त की जाती थी। बैठक में पालकों, जनप्रतिनिधियों, केन्द्र संचालक एवं बच्चे प्रतिभाग करते। बैठक में पालक बच्चों के द्वारा किए गए काम को देखते और यह भी समझते कि बच्चे गतिविधियों में प्रतिभाग करने में कितना नियमित थे और उन्होंने क्या सीखा। 50 प्रतिशत से कम उपस्थिति वाले बच्चों के नाम पालकों को बताए जाते और पालकों और बच्चों के सहयोग से उपस्थिति बढ़ाने का प्रयास किया जाता था।

## स्कूल के साथ सम्बन्ध

प्रत्येक सप्ताह अलग-अलग प्राथमिक शालाओं में केन्द्र संचालकों की बैठक का आयोजन किया जाता था। बैठक में शासकीय स्कूल के शिक्षक भी शामिल होते। केन्द्र संचालक पिछले एक सप्ताह के काम की रिपोर्ट सभी के साथ साझा करते। अगले एक सप्ताह की योजना भी बनाई जाती। ऐसी ही एक बैठक में गणित के पर्चे को हल किया गया। किसी में एक शिक्षा-साहित्य के कुछ पन्नों को पढ़कर चर्चा की गई। इन सबमें शिक्षक भी शामिल होते थे। वे भी अपना अनुभव साझा करते।

जो विद्यार्थी-शिक्षक डीएलएड, बीएलएड का कोर्स कर रहे होते थे, वे समय-समय पर आकर इन केन्द्रों का अवलोकन करते थे और जो सिद्धान्त उन लोगों ने पढ़े थे, यहाँ उन सिद्धान्तों को क्रियान्वित होते हुए देखकर उन्हें ख़ुशी होती थी।

कुछ शैक्षिक संस्थान भी एक्सपोज़र विज़िट के लिए आते थे और इस तरह के प्रयास की सराहना करते और इससे सीखते थे।

## पालकों की विज़िट

जो केन्द्र ठीक से नहीं चल रहे थे उन केन्द्रों के पालकों को ऐसे केन्द्रों का विज़िट करवाया जाता था, जो अच्छी तरह चल रहे थे। ताकि वे बच्चों के साथ हो रहे काम, पालकों की भागीदारी, बच्चों की उपस्थिति, कक्षा की साज-सज्जा, बच्चों के सीखने का स्तर, बच्चों के पोर्टफ़ोलियो को देख पाएँ। वे वापस जाकर अपने गाँव के केन्द्र के बेहतर संचालन हेतु प्रयास करते थे। संचालक को भी उसकी ज़िम्मेदारी का निर्वहन पूरी निष्ठा के साथ करने के लिए कहते थे। पालकों की सक्रिय भूमिका हेतु उन्हें विभिन्न संस्थानों का भी एक्सपोज़र विज़िट करवाया जाता था।

## उपलब्धियों पर नज़र

शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र से शासकीय स्कूलों के बच्चों में क्या बदलाव आया, यह जानने के लिए शुरू में बेसलाईन, कार्यक्रम के मध्य में मिडलाईन और कार्यक्रम के अन्त में एंडलाईन टेस्ट किया गया। कक्षा-1 के स्तर का भाषा और गणित का पर्चा तीसरी कक्षा के बच्चे से करवाया गया और कक्षा तीसरी के स्तर में हो रहे बदलावों को देखा गया।

तामिया में 35 प्राथमिक शालाओं में 50 केन्द्रों को स्थापित किया गया। तीन साल में लगभग 85 युवाओं को प्रशिक्षित किया गया और वे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के बारे में अपनी समझ विकसित कर पाए। शासकीय स्कूलों के शिक्षकों ने भी अपने स्कूलों के बच्चों को सिखाने में इन युवाओं की मदद ली और बदले में कई सारी दक्षताओं को सीखने में भी उनका सहयोग किया। इस तरह गाँव में युवाओं का एक अच्छा स्रोत समूह बनकर तैयार हुआ जो गाँव के बच्चों की मदद करता था स्वयं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के मायने समझता था और जिसने अपने परिवार के, अपने मोहल्ले के बच्चों को अच्छी शिक्षा देकर मुख्यधारा से जोड़ने का काम किया।

**नीलेश कुमार मालवीय** एकलव्य होशंगाबाद में कार्यरत हैं। उन्हें प्राथमिक शाला और समुदाय के साथ काम करने का एक लम्बा अनुभव है। उनसे *nileshmalviya76@gmail.com* पर सम्पर्क किया जा सकता है।